Volume 2; Issue 2
April to Jun 2025

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika

संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 2; Issue 2; April to Jun, 2025; Page No. 32-40

Peer Review, Indexed and Refereed Journal

प्रयाग तीर्थ में कुम्भपर्व का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महात्म्य

डॉ.भरत कुमार

सहायक आचार्य, संस्कृत

एस.पी.एम.कॉलेज, प्रयागराज

शोध सारांश

सनातन संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् संस्कृति है। आध्यात्मिकता इसका प्राणतत्व है। कारण इसका निर्माण ऐसे ऋषियों, महर्षियों एवम् तत्वज्ञानियों के द्वारा किया गया है जो सनातन सत्य के साक्षात्कार को ही जीवन की सार्थकता के रूप में स्वीकार करते हैं। संसार के कण - कण में अविनाशी सत्य की सत्ता का ही दर्शन करते हैं। इस अविनाशी तत्त्व की आत्मोपलब्धि ही मानव जीवन का चर्म लक्ष्य है। सनातन संस्कृति में जिसे मोक्ष कहा गया है। भारत की इस सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत की आधारभूमि प्रयाग है। राष्ट्र के सांस्कृतिक इतिहास में प्रयाग का स्थान बहुत ऊंचा है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम पर भारतीय संस्कृति के कई विशिष्ट अध्याय रचे गए हैं। महाभारत के आदिपर्व में प्रयाग तीर्थ को सोम, वरुण और प्रजापति की जन्मभूमि कहा गया है। वनपर्व में पुलस्त्य तथा धौम्य ऋषि की यात्रा के प्रसंग में सभी देवताओं, ऋषियों एवं तीर्थों का निवास स्थान बताया गया है।[1] समस्त तीर्थों का निवास स्थल होने के कारण ही प्रयाग को 'तीर्थराज' की संख्या में अलंकृत किया गया। सृष्टि रचनाकार ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ प्रयाग की पवन भूमि पर ही किया था। ऐसी मान्यता है कि ब्रह्मा जी ने यहाँ पर दस अश्वमेधयज्ञों का अनुष्ठान किया था, जिंस स्थान पर ये सभी यज्ञ संपन्न हुए उसे आज भी दशाश्वमेध घाट के नाम से जाना जाता है।

मुख्य शब्द: *प्रयाग, कुम्भपर्व, धार्मिक, सांस्कृतिक महात्म्य*

सनातन संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् संस्कृति है। आध्यात्मिकता इसका प्राणतत्व है। कारण इसका निर्माण ऐसे ऋषियों, महर्षियों एवम् तत्वज्ञानियों के द्वारा किया गया है जो सनातन सत्य के साक्षात्कार को ही जीवन की सार्थकता के रूप में स्वीकार करते हैं। संसार के कण - कण में अविनाशी सत्य की सत्ता का ही दर्शन करते हैं। इस अविनाशी तत्त्व की आत्मोपलब्धि ही मानव जीवन का चर्म लक्ष्य है। सनातन संस्कृति में जिसे मोक्ष कहा गया है। भारत की इस सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत की आधारभूमि प्रयाग है। राष्ट्र के सांस्कृतिक इतिहास में प्रयाग का स्थान बहुत ऊंचा है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम पर भारतीय संस्कृति के कई विशिष्ट अध्याय रचे गए हैं। महाभारत के आदिपर्व में प्रयाग तीर्थ को सोम, वरुण और प्रजापति की जन्मभूमि कहा गया है। वनपर्व में पुलस्त्य तथा धौम्य ऋषि की यात्रा के प्रसंग में सभी देवताओं, ऋषियों एवं तीर्थों का निवास स्थान बताया गया है।[1] समस्त तीर्थों का निवास स्थल होने के कारण ही प्रयाग को 'तीर्थराज' की संख्या में अलंकृत किया गया। सृष्टि रचनाकार ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ प्रयाग की पवन भूमि पर ही किया था। ऐसी मान्यता है कि ब्रह्मा जी ने यहाँ पर दस अश्वमेधयज्ञों का अनुष्ठान किया था, जिंस स्थान पर ये सभी यज्ञ संपन्न हुए उसे आज भी दशाश्वमेध घाट के नाम से जाना जाता है।[2]

प्रयाग - तीर्थ के नामकरण के विषय में कहा जाता है कि निरंतर यज्ञ-याग आदि क्रियाओं के होने के कारण यह क्षेत्र प्रयाग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रयाग शब्द की निष्पत्ति यज् धातु मानी गई है- **'प्रकृष्टो यज्ञो अभूत्त् यत्र तदेव प्रयागः'** अर्थात जहाँ पर श्रेष्ठ यज्ञ-यागादि हुए हों वह स्थान ही प्रयाग है। यही नहीं इसके नामकरण के संदर्भ में स्कन्द पुराण के काशीखंड के 22 वें अध्याय में कहा गया है-

दृष्ट्वा प्रकृष्टं यागेभ्यः पुष्टेभ्यो दक्षिणादिभिः।
प्रयागमिति तन्नाम कृतं हरिहरादिभिः ।।[3]

अर्थात् दान - दक्षिणा से पारितोषित एवं यहाँ पर प्रकृष्ट रूप से होने वाले यज्ञयागादि क्रियाओं को देखकर भगवान विष्णु एवं भगवान शंकर ने इसका नाम प्रयाग रखा। जिसका नामकरण स्वयं परमात्मा के द्वारा किया गया हो उस प्रयाग की महिमा का वर्णन वाणी के द्वारा नहीं किया जा सकता है। स्कंदपुराण में ही एक अन्य स्थान पर कहा गया है - **प्रकृष्टं सर्वयागेभ्यः प्रयागमिति कथ्यते**। अर्थात जितने भी यज्ञ-यागादि कर्म हैं उनके लिए सर्वोत्कृष्ट तीर्थ होने के कारण इसे प्रयाग कहा जाता है।

प्रयागतीर्थ के भौगोलिक विस्तार के विषय में पुराणों में अनेक स्थानों पर विवरण प्राप्त होता है।

पद्म पुराण के अनुसार प्रयाग पांच योजना की परिधि में व्याप्त हैं और उस भू-भाग में प्रवेश करने पर अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य फल प्राप्त होता है।[4] कूर्म पुराण में भी इसी प्रकार का विवरण कुछ इसी तरह प्राप्त होता है –

पञ्चयोजनविस्तीर्ण ब्रह्मणः परमेष्ठिनः |

प्रयागं प्रथितमं तीर्थं यस्य महात्म्यमीरितं ।। [5]

प्रयाग की पुण्यभूमि सृष्टि सृजनकार की यज्ञभूमि के रूप में विश्व विश्रुत है । मत्स्य पुराण में इसकी सीमाओं का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि पूर्व में प्रतिष्ठान पुर का कूप (वर्तमान में झूंसी का क्षेत्र) उत्तर में वासुकी कूप (वर्तमान नागवासुकी मंदिर) पश्चिमी में कंबल तथा अश्वतर नाग (काल के प्रभाव से वर्तमान स्थिति स्पष्ट नहीं) तथा दक्षिण में बहुमूलक नाग (वर्तमान अरैल क्षेत्र) ये प्रयागतीर्थ की चतुर्दिक सीमाएं हैं-

आप्रयागं प्रतिष्ठानादापुराद् वासुकेर्ह्रदात् ।

कम्बलाश्वतारौ नागौ नागाच्च बहुमूल्कात् ।

एतत्प्रजापतेः क्षेत्रं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।।[6]

पुराणों के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा ने यज्ञीय आहुति के लिए जिन तीन वेदियों का निर्माण किया था उनमे - गया पूर्वी वेदी, प्रयाग - मध्यम बेदी तथा कुरुक्षेत्र - उत्तर वेदी के रूप में प्रसिद्ध है।[7] गंगा यमुना की अविरल धारा पूरे प्रयाग क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित करती है, ये तीनों भाग अग्निस्वरूप यज्ञवेदी के रूप मेंमान्य हैं । मत्स्य पुराण के अनुसार यहाँ तीन अग्नि कुंड भी हैं । इनमे गंगा यमुना का मध्यभाग -गार्हपत्याग्नि , गंगा पार अरैल का भाग - दक्षिणाग्नि तथा पूर्व का भाग - आह्वनीय अग्नि माना गया है।[7] मार्कण्डेय ऋषि के अनुसार इन्हीं तीन कुंडों के बीच से संपूर्ण तीर्थों द्वारा नमस्कृत गंगा प्रवाहित होती हुई प्रयाग से आगे निकलती है तथा तीनों लोकों में विख्यात लोकभाविनी सूर्य पुत्री यमुना का यहीं पर गंगा से मिलन होता है। गङ्गा और यमुना का यह मध्य भाग पृथ्वी का जगनस्थल कहलाता है- **'गंगायमुनायोर्मध्ये पृथिव्या जघनं स्मृतम् ।'** [8]

संस्कृत साहित्य में अनेक स्थानों पर प्रयाग तीर्थ के महात्म्य एवं त्रिवेणी संगम का गौरवगान किया गया है। पद्म पुराण में भगवान शंकर, नारद से प्रयाग की महिमा का गुणगान करते हुए कहते हैं - जो पुण्यात्मा हैं वही प्रयाग की पुण्यभूमि पर निवास करते हैं। जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियों का संगम है, वहीं तीर्थ प्रवर प्रयाग है। वह देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। इसके सामान तीर्थ तीनों लोकों में न हुआ है न होगा। जो प्रातःकाल प्रयाग में स्नान करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर परम पद को प्राप्त हो जाता है[9] और इस संसार में आवागमन के चक्र से सदा के लिए

मुक्त हो जाता है । पद्म पुराण में ही प्रयागतीर्थ कि वंदना करते हुए कहा गया है –

ब्राह्मीनपुत्रीत्रिपथास्त्रिवेणी

समगामेनाक्षतयागमत्रान् ।

यात्राप्लुप्तान् ब्रह्मपदं नयन्ति,

स तीर्थराजो जयति प्रयागः ।।[10]

अर्थात ये तीनों नदियां जहाँ त्रिवेणी संगम में स्नान से अक्षत फल को प्राप्त कर चुकें मनुष्यों को ब्रह्म लोक में पहुंचा देती हैं, उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो। प्रयाग क्षेत्र में पांच कुण्ड हैं जिनके मध्य भाग से गंगा प्रवाहित होती है।[11] प्रयाग तीर्थ की सीमा में प्रवेश करने मात्र से ही व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति जो तीर्थ यात्रा करने में असमर्थ हैं, पुण्यात्मा हों अथवा पापी गंगा के स्मरण, कीर्तन मात्र से ही वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं।[12] यही कारण है कि प्रयाग को प्रथम तीर्थ कहा गया है और चतुर्वर्ग फल की प्राप्ति कराने वाला भी कहा गया है – **प्रथमं तीर्थराजं तु प्रयागाख्यं सुविश्रुतम् ।**
कामिकं सर्वतीर्थानां धर्मकामार्थमोक्षदम् ।।

शास्त्रों में बहुत से तीर्थों का विवरण प्राप्त होता है। ये सभी तीर्थ पापों का शमन करने मे समर्थ है, किंतु प्रयाग का महात्म्य सर्वाधिक क्यों है? इसका कारण है - तीर्थ से इतर किसी अन्य क्षेत्र में किए गए पापकर्म का नाश पुण्यक्षेत्र के निवास करने से हो जाता है, किंतु यदि पुण्यक्षेत्र में कोई पाप कर्म हो जाता है तो उसका शमन तीर्थ अथवा पुण्यक्षेत्र के प्रवास से नहीं हो पाता। उस पापकर्म का नाश तीर्थराज प्रयाग क्षेत्र में प्रवास से ही संभव है –

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति ।

पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं प्रयागे तीर्थनायके ।।[13]

कुंभ भारतीय सनातन परंपरा का महापर्व है। राष्ट्र का गौरव हैं। भारतीय लोकपर्वों की परंपरा में कुम्भ का स्थान सबसे ऊंचा है। यह हमारी सनातन परंपरा और लोक आस्था का सबसे बड़ा पर्व है। हमारी परंपरा के आकर्षण के वशीभूत होकर करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु खींचे चले आते हैं और समस्त भेदो को त्यागकर पवित्र संगम में सबके साथ डुबकी लगाकर आनंदित होते हैं। कुंभपर्व भारत के चार महानगरों में प्रयाग (गंगा यमुना के संगम तट पर), हरिद्वार (गंगा तट पर), उज्जैन (क्षिप्रा नदी के तट पर), नासिक (गोदावरी के तट पर) आयोजित होता है।[14] पौराणिक मान्यता के अनुसार दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण जब देवता श्रीहीन हो गये तो उन्होंने भगवान विष्णु की शरण ली। भगवान श्रीहरि के परामर्श से देवताओं ने राक्षसों के साथ मिलकर समुद्र का मंथन किया । समुद्र मंथन से 14 दिव्य रत्न प्राप्त हुए, जिनमें सबसे प्रमुख अमृत कुंभ था। मंथन से प्राप्त अमृत कलश को हस्तगत करने के लिये देवताओं और असुरों में संघर्ष प्रारंभ हो गया। अमृत कलश के लिए हुए संघर्ष में अमृत की कुछ बूंदें

छलककर जिन चार स्थलों पर गिरीं, वहीं पर कुंभ का आयोजन किया जाता है। स्कन्द पुराण में कहा भी गया है –

गंगाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।

कुम्भाख्यायेस्तु योगोऽयं प्रोच्यते शंकरादिभिः॥[15]

एक अन्य मान्यता के अनुसार भगवान गरुण देव ने नागलोक से अमृत कुंभ को उठाकर क्षीर सागर तक पहुंचाने के क्रम में जिन स्थानों पर अमृत कुंभ को रखा कालांतर में वही स्थान कुंभ स्थल के रूप में ख्यातिलब्ध हुए।[16]

ज्योतिषीय गणना के अनुसार आकाश मंडल में कुंभ योग होने पर ही कुंभपर्व का आयोजन होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार अमृत कुंभ को असुरों से सुरक्षित रखने में देवगुरु बृहस्पति, चन्द्रदेव एवं सूर्यदेव ने विशेष रूप से सहायता की थी , इसलिए जब इन ग्रहों का योग होता है तभी कुंभ का आयोजन होता है । ज्योतिष की गणना के अनुसार कुंभ योग चार प्रकार का होता है -

प्रथम - बृहस्पति जिस समय कुंभ राशि में एवं सूर्य मेष राशि में प्रवेश करते हैं उस समय हरिद्वार में गंगा तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।

द्वितीय – जिस कालखण्ड में बृहस्पति एवं सूर्य सिंह राशि में स्थित होते हैं उस समय नासिक में गोदावरी के तट पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।

तृतीय - बृहस्पति जब सिंह राशि में और सूर्य मेष राशि में होता है उस समय उज्जैन में क्षिप्रा के तट पर कुंभ का आयोजन होता है।

चतुर्थं – जिस समय बृहस्पति के मेष राशि में तथा सूर्य और चंद्र के मकर राशि में स्थित होने पर माघ माह में अमावस्या के दिन यह शुभ संयोग निर्मित पी होता है। इसी दिन से प्रयाग में त्रिवेणी संगम तट पर कुंभ स्नान पर्व का ग्रह योग बनता है। प्रत्येक बारहवें वर्ष कुंभ एवं 144 वें वर्ष महाकुंभ का तथा छह वर्ष पर अर्द्धकुंभ का ग्रह योग बनता है ।[17] अर्द्धकुंभ प्रयाग एवं हरिद्वार में ही आयोजित होता है । यह आयोजन पौष पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर महा शिवरात्रि को पूर्णता प्राप्त करता है। 45 दिनों तक चलने वाले इस महापर्व में देश - विदेश से आये हुए करोणों श्रद्धालु त्रिवेणी संगम के पावन तट पर स्नान, दान कर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं।

प्रयाग, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में कुंभ परंपरा का श्रीगणेश कब से हुआ इस विषय में पुष्ट प्रमाणों का अभाव है। यद्यपि विश्व के प्राचीनतम उपलब्ध लिखित साहित्य वेद में अनेक स्थानों पर कुंभ शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है और जल प्रवाह से उसका संबंध भी जुड़ता है, किंतु कुंभ महापर्व से उसका कोई संबंध जुड़ता प्रतीत नहीं होता । महाभारत में 12 वर्षों में पूर्ण होने वाले एक महान यज्ञ एवं बड़ी संख्या में सरस्वती नदी के तट पर स्नान

के लिए एकत्रित हुए ऋषियों का विवरण प्राप्त होता है। यद्यपि यहाँ कुंभ का नामोल्लेख नहीं है फिर भी प्रकारांतर से कुंभपर्व से इसका संबंध जोड़ा जाता है।[18] पौराणिक काल से कुंभपर्व का बिशद विवरण प्राप्त होनेलगता है। अनेक पुराणो में, कुंभ की कथा, स्नान, दान आदि के महात्म्य का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। पुराणो का संकलन गुप्तकाल (320 से 510 ई.) से माना जाता है। इससे सिद्ध होता है कि गुप्तकाल से पूर्व से ही कुंभ स्नान, दान की परंपरा निर्बाध रूप से चली आ रही है। कुंभ का भव्य आयोजन एवं धार्मिक मेले के रूप में आयोजन का श्रेय भगवान आदि शंकराचार्य को जाता है। उन्होंने धार्मिक वाद – विवाद, संवाद और आध्यात्मिक चर्चा के लिए साधु - संतों एवं महात्माओं को इस पावन अवसर पर एकत्र कर सनातन धर्म को सुदृढ़ बनाने का महान कार्य किया। इस अवसर पर स्नान, दान एवं पुण्यार्जन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं एवं भक्तजनों को संगम के पवित्र जल में स्नान का पुण्य तो मिलता ही था साथ में सिद्ध महात्माओं एवं साधु संतों की चरणरज एवं वाणी रुपी अमृतपान का सुअवसर भी प्राप्त होता था। भगवान शंकराचार्य के प्रयासों के परिणाम स्वरुप इस स्नान पर्व ने महापर्व का रूप धारण कर भारत की भावात्मक और सांस्कृतिक एकता का आधार बना।

माघ मास में आयोजित होने वाले कुंभ महापर्व में, स्नान, ध्यान, भजन, कीर्तन, पुण्यार्जन एवं कल्पवास की परंपरा अति प्राचीन है। स्कंद पुराण के अनुसार 3,50,00,000 करोड़ तीर्थ एवं समस्त मोक्षदायिनी सप्तपुरियां माघ मास में अपने शुद्धिकरणं हेतु प्रतिवर्ष प्रयाग आती है।[19] कूर्म पुराण के अनुसार माघ मास में गंगा - यमुना के संगम तट पर 66 हजार तीर्थ एकत्र होते हैं। विधिपूर्वक 1,00,000 गायों को दान करने से जो फल प्राप्त होता है वही फल माघ मास में प्रयाग संगम में 3 दिन स्नान करने से प्राप्त हो जाता है।[20] इसी प्रकार का वर्णन मत्स्य पुराण में भी प्राप्त होता है -

षष्टितीर्थसहस्त्राणि षष्टितीर्थशतानि च।
माघमासे गमिष्यन्ति गङ्गायमुनसंगमम् ॥[21]

मत्स्य पुराण के ही 110 वें अध्याय में मार्कण्डेय ऋषि कहते हैं कि नैमिषारणय, पुष्कर, गोतीर्थ, सिंधुसागर,गया और गंगासागर तथा इसके सहित 3,00,10,000 तीर्थ एवं सभी पुण्यप्रद पर्वत प्रयाग तीर्थ में नित्य निवास करते हैं –

दश तीर्थसहस्त्राणि तिस्त्रः कोट्यस्तथा पराः।
प्रयागे संस्थिता नित्यमेवमाहुर्मनीशिणः ॥[22]

कूर्म पुराण के 35 वे अध्याय में मार्कण्डेय ऋषि युधिष्टिर से कहते हैं कि प्रयाग में 10 हजार प्रमुख तथा 60,करोड़ दूसरे तीर्थो का सानिध्य होने के कारण यह स्थान परम पवित्र है। इसके अतिरिक्त

मत्स्य पुराण के 106 वें अध्याय में 10,000 बड़े तीर्थ तथा 3,करोड़ अन्य तीर्थों का निवास प्रयाग तीर्थ में वर्णित है।[23] गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम पर तीर्थों की संख्या के विषय में शास्त्रों में भले ही मतभेद हो, किंतु भारत के अधिकांश तीर्थों का निवास प्रयाग क्षेत्र में है इसमें मतैक्य हैं। इस प्रकार प्रयाग तीर्थ नदियों का संगम क्षेत्र ही नहीं अपितु तीर्थों का संगम क्षेत्र भी हैं। इस पावन क्षेत्र की महिमा इतनी है कि मनुष्य कितना भी बड़ा पापा भी क्यों न हो यदि वह हज़ारों योजना दूर से भी गंगा का स्मरण करता है तो स्मरण मात्र वह समस्त पापों से मुक्त होकर परम पदों को प्राप्त हो जाता है।[24] जो मनुष्य, सत्यवादी, क्रोध रहित, अहिंसा परायण, धरमानुगामी, तत्वज्ञ और गौ तथा ब्राह्मण के हित में तत्पर रहकर गंगा और यमुना के संगम में स्नान करता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।[25] कूर्म पुराण के अनुसार गंगा यमुना के संगम पर जो कठोर व्रत धारण कर स्नान करता है वह अश्वमेध तथा राजसूय यज्ञ के समान फल प्राप्त करता है।[26] कूर्म पुराण में अन्यत्र यह भी कहा गया है कि संगम तट पर जो व्यक्ति स्नान के लिए जल में प्रवेश करता है, वह जिसप्रकार चंद्रमा राहु से मुक्त हो जाता है उसी प्रकार वह मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है।[27]

पौराणिक मान्यता के अनुसार कुंभ महापर्व पर प्रयाग में त्रिवेणी स्नान का बड़ा महात्म्य है। इस पावन अवसर पर मानव ही नहीं अपितु सभी देवगण त्रिवेणी संगम पर एकत्र होते हैं, इसलिए जनसामान्य को यहाँ आने मात्र से चारों धाम का पूर्ण फल प्राप्त हो जाता है। स्कन्द पुराण के अनुसार जो पुण्य कार्तिक मास में हजारों बार स्नान करने से, माघ मास में सैकड़ों बार गंगा स्नान से और बैसाख में नर्मदा में करोड़ों बार स्नान करने से प्राप्त होता है, वही पुण्य फल प्रयाग कुंभ में मात्र एक बार स्नान करने से प्राप्त हो जाता है –

सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च ।
वैशाखे नर्मदाकोटिः कुंभस्नानेन तत्फलम् ।।[28]

शास्त्रों में इच्छित फल हेतु अनेक प्रकार के यज्ञों का विधान है। यज्ञ अत्यधिक खर्चीले एवं श्रमसाध्य होने के कारण साधारण मनुष्यों के लिए इनका अनुष्ठान कर पाना संभव नहीं है, किंतु गंगा स्नान सभी मनुष्यों के लिए सहज है। जो पुण्य 1000 अश्वमेध यज्ञ, 100 वाजपेय यज्ञ तथा पृथ्वी की 1,00,000 बार प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है वही त्रिवेणी संगम पर मात्र कुंभ में स्नान करने से प्राप्त हो जाता है-

अश्वमेधसहस्त्राणि वाजपेयशतानि च ।
लक्षं प्रदक्षिणा पृथिव्याः कुम्भस्नानेन
तत्फलम्।।[29]

प्रकार स्पष्ट है प्रयाग तीर्थ में कुंभ स्नान का फल अत्यंत पुण्यदायी है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान कालीन साहित्य तक में कुंभ स्नान पर्व की महत्ता का मुक्तकंठ से गुणगान किया गया है। माघ मास में आयोजित होने वाला कुंभ केवल मनुष्यों का ही उद्धार नहीं करता, अपितु समस्त तीर्थों का भी उद्धार करता है, क्योंकि समस्त तीर्थ अपने शुद्धिकरण के लिए माघ मास में त्रिवेणी संगम वास करते हैं। इस महा मेले के आयोजन का स्वरूप भले ही धार्मिक हो पर इसका एक अन्य उद्देश्य भारत की एकता और सांस्कृतिक जागरण भी है। इस महापर्व में देश के सभी भूभागों से ऋषि, मुनि, साधु, संत तथा सामान्य जन माँ गंगा की गोद का आश्रय लेते हैं। शशी सबकी बेश-भूषा, भाषा, रहन - सहन, आचार्य - विचार, मान्यता एवं परंपराएं अलग अलग होने पर भी त्रिवेणी संगम प्रयाग तीर्थ में एकत्व का अनुभव करते हैं और एक दूसरे से परिचित हो कर उनसे सम्पर्क भी स्थापित करते हैं। जिससे उनमें विश्व बंधुत्व की भावना का सूत्रपात होता है। यही सूत्र हमारी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता का आधार है। अंततः प्रयाग तीर्थ एवं गंगा के विषय में ब्रह्मपुराण का यह कथन सत्य ही प्रमाणित होता है –

न माधवसमो देवो न च गंगासमा नदी ।

न तीर्थराज सदृशं क्षेत्रमस्ति जगत्त्रये ।।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. पं.राम जी शर्मा, प्रयागराज कुम्भ-महापर्व माहात्म्य, प्रकाशक :दुर्गा पुस्तक भंडार इलाहबाद ; पृष्ठ-03
2. कुमार निर्मलेंदु ,अर्धकुम्भ कुम्भ महाकुम्भ, प्रकाशक : लोकभारती प्रयागराज, संस्करण-2025, पृष्ठ-13
3. पं.राम जी शर्मा, प्रयागराज कुम्भ-महापर्व माहात्म्य, पृष्ठ-04
4. कुमार निर्मलेंदु , प्रयागराज अर्धकुम्भ कुम्भ महाकुम्भ, पृष्ठ- 54
5. पं.राम जी शर्मा, प्रयागराज कुम्भ-महापर्व माहात्म्य, पृष्ठ-04
6. मत्स्यमहापुराण, प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर,उन्नीसवां पुनर्मुद्रण -अध्याय 104 /श्लोक 05
7. कुमार निर्मलेंदु , प्रयागराज अर्धकुम्भ कुम्भ महाकुम्भ, पृष्ठ- 53
8. मत्स्यमहापुराण, प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर,उन्नीसवां पुनर्मुद्रण -अध्याय 110 /श्लोक 04-06
9. पद्मपुराण (संक्षिप्त), प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर,चालीसवां पुनर्मुद्रण , पृष्ठ-634
10. पद्मपुराण (संक्षिप्त), प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर,चालीसवां पुनर्मुद्रण , पृष्ठ-630

11. मत्स्यमहापुराण, अध्याय 104 /श्लोक 13
12. कुमार निर्मलेंदु , प्रयागराज अर्धकुम्भ कुम्भ महाकुम्भ, पृष्ठ- 59
13. पं.राम जी शर्मा, कुम्भ-महापर्व माहात्म्य, पृष्ठ-13
14. कुमार निर्मलेंदु , प्रयागराज अर्धकुम्भ कुम्भ महाकुम्भ, पृष्ठ- 155
15. तदेव – पृष्ठ -155
16. तदेव – पृष्ठ -166
17. तदेव – पृष्ठ -155
18. तदेव – पृष्ठ -175
19. पं.राम जी शर्मा, कुम्भ-महापर्व माहात्म्य, पृष्ठ-05
20. कूर्म पुराण, प्रकाशक : गीता प्रेस गोरखपुर,अठारहवां पुनर्मुद्रण, अध्याय 36 /श्लोक 01
21. मत्स्यमहापुराण, अध्याय 107 /श्लोक 07
22. मत्स्यमहापुराण, अध्याय 110 /श्लोक 03
23. मत्स्यमहापुराण, अध्याय 106 /श्लोक 23
24. मत्स्यमहापुराण, अध्याय 104 /श्लोक 14
25. मत्स्यमहापुराण, अध्याय 104 /श्लोक 17
26. कूर्म पुराण, अध्याय 37 /श्लोक 12
27. कूर्म पुराण, अध्याय 36 /श्लोक 06
28. पं.राम जी शर्मा, कुम्भ-महापर्व माहात्म्य, पृष्ठ-37
29. पं.राम जी शर्मा, कुम्भ-महापर्व माहात्म्य, पृष्ठ-37